0974CH09

नवम अध्याय

समास परिचय

'समसनम्' इति समास:। इस प्रकार 'समास' शब्द का अर्थ है— संक्षेपण। अर्थात् दो या दो से अधिक पदों में प्रयुक्त विभक्तियों, समुच्चय बोधक 'च' आदि को हटाकर एक पद बनाना। **यथा**— गायने कुशला = गायनकुशला। इसी तरह राज्ञ: पुरुष: = राजपुरुष: पदों में विभक्ति-लोप, सीता च रामश्च = सीतारामौ में समुच्चय बोधक 'च' का लोप हुआ है। इसी प्रकार विद्या एव धनं यस्य स: = विद्याधन: पद में कुछ पदों का लोप कर संक्षेपण क्रिया द्वारा गायनकुशला, राजपुरुष:, सीतारामौ तथा विद्याधन: पद बनाए गए हैं।

कहीं-कहीं पदों के बीच की विभक्ति का लोप नहीं भी होता है।

यथा— खेचर:, युधिष्ठिर:, वनेचर: आदि। ऐसे समासों को अलुक् समास कहते हैं। पदों की प्रधानता के आधार पर समास के मुख्यत: चार भेद होते हैं— (1) अव्ययीभाव (2) तत्पुरुष (3) द्वन्द्व तथा (4) बहुव्रीहि। तत्पुरुष के दो उपभेद भी हैं— कर्मधारय एवं द्विगु। इस प्रकार सामान्य रूप से समास के छ: भेद हैं।

© NCERT not to be republished

1. अव्ययीभाव

इस समास में पहला पद अव्यय होने के साथ ही साथ प्रधान भी होता है। समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है तथा नपुंसकलिङ्ग में प्रयुक्त होता है, यथा—

यथाशक्ति	=	शक्तिम् अनतिक्रम्य
निर्विघ्नम्	=	विघ्नानाम् अभाव:
उपगङ्गम्	=	गङ्गाया: समीपम्
अनुरूपम्	=	रूपस्य योग्यम्

प्रत्येकम्	=	एकम् एकम् इति
प्रतिगृहम्	=	गृहं गृहम् इति
निर्मक्षिकम्	=	मक्षिकाणाम् अभाव:
उपनदम्	=	नद्या: समीपम्
प्रत्यक्षम्	=	अक्ष्णो: प्रति
परोक्षम्	=	अक्ष्णो: परम्

2. तत्पुरुष समास

इस समास में प्रायेण उत्तर पद की प्रधानता होती है। इसके दोनों पदों में अलग-अलग विभक्तियाँ होती हैं। कहीं-कहीं पर दोनों पदों में समान विभक्ति भी होती है। ऐसी स्थिति में पूर्वपद की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है। इसमें द्वितीया से सप्तमी तक की विभक्ति का लोप करके समस्त पद बनाया जाता है।

उदाहरण—

शरणम् आगत:	=	शरणागत:	द्वितीया तत्पुरुष
शरणं प्राप्त:	=	शरणप्राप्त:	
सुखं प्राप्त:	=	सुखप्राप्त:	
पित्रा युक्त	=	पितृयुक्त:	तृतीया तत्पुरुष
सर्पेण दष्ट:	=	सर्पदष्ट:	
शरेण विद्ध:	=	शरविद्ध:	
अग्निना दग्ध:	=	अग्निदग्ध:	
धनेन हीन:	=	धनहीन:	
विद्यया हीन:	=	विद्याहीन:	
भूताय बलि:	=	भूतबलि:	चतुर्थी तत्पुरुष
दानाय पात्रम्	=	दानपात्रम्	
यूपाय दारु	=	यूपदारु	
स्नानाय इदम्	=	स्नानार्थम्	
तस्मै इदम्	=	तदर्थम्	

चौरात् भयम्	=	चौरभयम्	पञ्चमी तत्पुरुष
रोगात् मुक्त:	=	रोगमुक्त:	
अश्वात् पतित:	=	अश्वपतित:	
स्वर्गात् पतित:	=	स्वर्गपतित:	
सिंहात् भीत:	=	सिंहभीत:	
राज्ञ: पुरुष:	=	राजपुरुष:	षष्ठी तत्पुरुष
देवानां पति:	=	देवपति:	
नराणां पति:	=	नरपति:	
देवस्य पूजा	=	देवपूजा	
सुखस्य भोग:	=	सुखभोग:	
युद्धे निपुण:	=	युद्धनिपुण:	सप्तमी तत्पुरुष
कार्ये कुशल:	=	कार्यकुशल:	
शास्त्रे प्रवीण:	=	शास्त्रप्रवीण:	
जले मग्न:	=	जलमग्न:	
सभायां पण्डित:	=	सभापण्डित:	
न धार्मिक:	=	अधार्मिक:	नञ् तत्पुरुष
न सुखम्	=	असुखम्	
न आदि:	=	अनादि:	
न सत्यम्	=	असत्यम्	

तत्पुरुष समास के दो और भी भेद हैं— (i) समानाधिकरण तत्पुरुष अर्थात् कर्मधारय समास (ii) द्विगु समास।

i) कर्मधारय समास

इसके दोनों पदों में विभक्ति समान होती है। इसके तीन स्वरूप होते हैं—

(क) कभी-कभी विग्रह पदों में पूर्वपद विशेषण होता है तथा उत्तरपद विशेष्य होता है।

(ख) कभी-कभी पूर्वपद उपमान होता है और उत्तरपद उपमेय होता है।

© NCERT not to be republished

(ग) कभी-कभी दोनों पद विशेषण होते हैं।

उदाहरण—

नीलम् उत्पलम्	=	नीलोत्पलम्	कर्मधारय (विशेषण-विशेष्य)
विशाल: वृक्ष:	=	विशालवृक्ष:	
मधुरं फलम्	=	मधुरफलम्	
ज्येष्ठ: पुत्र:	=	ज्येष्ठपुत्र:	
कुत्सित: राजा	=	कुराजा	
सुन्दर: पुरुष:	=	सुपुरुष:	
महान् च असौ राजा	=	महाराज:	
घन इव श्याम:	=	घनश्याम:	कर्मधारय (उपमान-उपमेय)
कमलम् इव मुखम्	=	कमलमुखम्	
चन्द्र इव मुखम्	=	चन्द्रमुखम्	
नर: सिंह इव	=	नरसिंह:	
शीतं च उष्णम्	=	शीतोष्णम्	कर्मधारय (उभयपद-विशेषण)
रक्तश्च पीत:	=	रक्तपीत:	
आदौ सुप्त: पश्चादुत्थित:	=	सुप्तोत्थित:	

ii) द्विगु समास

जब कर्मधारय समास का पूर्वपद संख्यावाची हो तो उसे द्विगु समास कहते हैं।

यह समास सामान्यत: (समूह) अर्थ में होता है। इसके विग्रह में प्रायेण षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। समस्त पद सामान्यतया नपुंसकलिङ्ग एक वचन में होता है।

उदाहरण—

सप्तानां दिनानां समाहार:	=	सप्तदिनम्
पञ्चानां पात्राणां समाहार:	=	पञ्चपात्रम्
त्रयाणां भुवनानां समाहार:	=	त्रिभुवनम्

© NCERT not to be republished

पञ्चानां रात्रीणां समाहार:	=	पञ्चरात्रम्
चतुर्णां युगानां समाहार:	=	चतुर्युगम्

- कभी-कभी द्विगु ईकारान्त स्त्रीलिङ्गी भी हो जाता है—

उदाहरण—

त्रयाणां लोकानां समाहार:	=	त्रिलोकी
पञ्चानां वटानां समाहार:	=	पञ्चवटी
सप्तानां शतानां समाहार:	=	सप्तशती
अष्टानां अध्यायानां समाहार:	=	अष्टाध्यायी

3. द्वन्द्व समास

जिस समस्त पद में दोनों पदों की प्रधानता होती है वहाँ द्वन्द्व समास होता है। इसके विग्रह में 'च' का प्रयोग होता है, जैसे— लवश्च कुशश्च = लवकुशौ। यहाँ जितनी प्रधानता 'लव' की है उतनी ही प्रधानता 'कुश' की भी है। द्वन्द्व समास के दो रूप माने गए हैं— (1) इतरेतर द्वन्द्व (2) समाहार द्वन्द्व

i) **इतरेतर द्वन्द्व**— जिस समस्त पद में दोनों पदों का अर्थ अलग-अलग होता है, उसे इतरेतर द्वन्द्व कहते हैं। समस्त पद में संख्या के अनुसार द्विवचन या बहुवचन होता है, किन्तु लिङ्ग परिवर्तन परवर्ती या उत्तरवर्ती पद के अनुसार होता है।

उदाहरण—

पार्वती च परमेश्वरश्च	=	पार्वतीपरमेश्वरौ
रामश्च कृष्णश्च	=	रामकृष्णौ
धर्मश्च अर्थश्च कामश्च मोक्षश्च	=	धर्मार्थकाममोक्षा:
सीता च रामश्च	=	सीतारामौ
पुत्रश्च कन्या च	=	पुत्रकन्ये
राधा च कृष्णश्च	=	राधाकृष्णौ
धनञ्च जनश्च यौवनञ्च	=	धनजनयौवनानि

© NCERT not to be republished

ii) **समाहार द्वन्द्व**— जहाँ अनेक वस्तुओं का संग्रह दिखाया जाता है अर्थात् समूह की प्रधानता रहती है, वहाँ समाहार द्वन्द्व समास होता है।

उदाहरण—

आहारश्च निद्रा च भयं च इति, एतेषां समाहार = आहारनिद्राभयम्
पाणी च पादौ च = पाणिपादम्
यवाश्च चणकाश्च = यवचणकम्
पुत्रश्च पौत्रश्च = पुत्रपौत्रम्

द्वन्द्व समास के सन्दर्भ में विशेष बातें—

- ह्रस्व इकारान्त तथा ह्रस्व उकारान्त पद को समस्त पद में पहले रखा जाता है।

  यथा— वायुश्च सूर्यश्च = वायुसूर्यौ
- द्वन्द्व में स्वरादि और ह्रस्व अकारान्त पद को पहले रखा जाता है।

  यथा— ईशश्च कृष्णश्च = ईशकृष्णौ।
- कम स्वर वर्णों वाले पद को पहले रखा जाता है।

  यथा— रामश्च केशवश्च = रामकेशवौ।
- ह्रस्व स्वर वाले पद को पहले रखते हैं।

  यथा— कुशश्च काशश्च = कुशकाशम्
- श्रेष्ठ या पूज्य पदों का प्रयोग पहले होता है।

यथा— माता च पिता च = मातापितरौ (पिता की अपेक्षा माता अधिक पूजनीय है)

4. बहुव्रीहि समास

जिस समास में पूर्व तथा उत्तर दोनों पद प्रधान न होकर किसी अन्य पद की प्रधानता होती है, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं।

विग्रह करते समय इसमें 'यस्य स:' आदि लगाया जाता है।

© NCERT not to be republished

उदाहरण—

महान्तौ बाहू यस्य सः	=	महाबाहुः (विष्णुः)
दश आननानि यस्य सः	=	दशाननः (रावणः)
पीतम् अम्बरम् यस्य सः	=	पीताम्बरः (कृष्णः)
चत्वारि मुखानि यस्य सः	=	चतुर्मुखः (ब्रह्मा)
चक्रं पाणौ यस्य सः	=	चक्रपाणिः (विष्णुः)
शूलं पाणौ यस्य सः	=	शूलपाणिः (शिवः)
चन्द्र इव मुखं यस्याः सा	=	चन्द्रमुखी (नारी)
पाषाणवत् हृदयं यस्य सः	=	पाषाणहृदयः (पुरुषः)
कमलम् इव नेत्रे यस्य सः	=	कमलनेत्रः (सुन्दर आँखों वाला)
चन्द्रः शेखरे यस्य सः	=	चन्द्रशेखरः (शिवः)

एकशेष

जहाँ अन्य पदों का लोप होकर एक ही पद शेष बचे, वहाँ एकशेष होता है। यह समास से भिन्न वृत्ति है।

उदाहरण— बालकश्च बालकश्च बालकश्च = बालकाः।

एकशेष में पुँल्लिङ्ग और स्त्रीलिङ्ग पदों में से पुँल्लिङ्ग पद ही शेष रहता है।

यथा— माता च पिता च = पितरौ
दुहिता च पुत्रश्च = पुत्रौ

© NCERT not to be republished

अभ्यासकार्यम्

प्र. 1. उदाहरणमनुसृत्य रिक्तस्थानानां पूर्तिः कोष्ठकात् समुचितैः समस्तपदैः कुरुत—

उदाहरण— तौ लवकुशौ वाल्मीकेः आश्रमे पठतः। (लवकुशे/ लवकुशौ)

i) .... जनः नित्यकर्म कृत्वा प्रातराशं करोति। (विशालवृक्षः/ सुप्तोत्थितः)

ii) त्रयाणां लोकानां समाहारः .... इति कथ्यते। (त्रिलोकी/ त्रिलोकम्)

iii) ऋषेः आश्रमः .... अस्ति। (प्रतिगृहम्/ उपगङ्गम्)

iv) तव .... मलिनम् अस्ति। (पाणिपादाः/ पाणिपादम्)

v) .... सैनिकः व्रणयुक्तः जातः। (स्वर्गपतितः/ अश्वपतितः)

vi) .... जीवनस्य उद्देश्याः सन्ति। (धर्मार्थकाममोक्षं/ धर्मार्थकाममोक्षाः)

प्र. 2. अधोलिखितवाक्येषु स्थूलपदानि आश्रित्य समस्तपदं विग्रहं वा लिखत—

यथा—	भिक्षुकः प्रत्येकं गृहं गच्छति।	एकम् एकम् इति
i)	शरणम् आगतः तु सदैव रक्षणीयः।	....
ii)	विद्यया हीनः छात्रः न शोभते।	....
iii)	असत्यं तु त्याज्यं भवति।	....
iv)	रामः महाराजः आसीत्।	....
v)	सीता च रामः च वनम् अगच्छताम्।	....
vi)	तडागः नीलोत्पलैः सुशोभते।	....

प्र. 3. उदाहरणानि पठित्वा तदनुसारं विग्रहं समासनामानि च लिखत।

उदाहरण—

पाणी च पादौ च तेषां समाहारः— पाणिपादम् (समाहार द्वन्द्व)

माता च पिता च इति — मातापितरौ (इतरेतर द्वन्द्व)

माता च पिता च इति — पितरौ (एकशेष)

© NCERT not to be republished

i) ब्राह्मणौ ....
ii) सुखदु:खम् ....
iii) शिरोग्रीवम् ....
iv) रामलक्ष्मणभरता: ....
v) अजौ ....
vi) बालका: ....
vii) शास्त्रप्रवीण: ....
viii) नरसिंह: ....
ix) प्रत्यक्षम् ....
x) दशानन: ....

प्र. 4. अधोलिखितवाक्येषु समस्तपदं चित्वा तस्य विग्रहं लिखत—

	समस्तपदम्	**विग्रहम्**
i)	विष्णु: पीताम्बरं धारयति।	....
ii)	भवत: कार्यं निर्विघ्नं समापयेत्।	....
iii)	दुर्गासप्तशती पठितव्या।	....
iv)	शरविद्ध: हंस: भूमौ पतित:।	....
v)	वृद्ध: पुत्रपौत्रम् दृष्ट्वा प्रसीदति।	....
vi)	विष्णु: चक्रपाणि: कथ्यते।	....

© NCERT not to be republished